10

यह मोह उदय दुख पावै...

यह मोह उदय दुख पावै , जग जीव अज्ञानी।।टेक।।
निज चेतन स्वरूप नहिं जाने, पर पदार्थ अपनावे।
पर परिणमन नहीं निज आश्रित, यह तहँ अति अकुलावे।।१।।
यह मोह उदय दुख पावै.....

इष्ट जानि रागादिक सेवै, ते विधि बंध बढ़ावै।
निज हित हेतु भाव चित सम्यक्, दर्शनादि नहिं ध्यावै।।२।।
यह मोह उदय दुख पावै .....

इन्द्रिय तृप्ति करन के काजै, विषय अनेक मिलावै।
ते न मिलें तब खेद खिन्न ह्वै, सम सुख हृदय न लावै।।३।।
यह मोह उदय दुख पावै .....

सकल कर्म क्षय लक्षण लक्षित, मोक्ष दशा नहि चावै।
''भागचन्द' ऐसे भ्रमसेती, काल अनन्त गमावै।।४।।
यह मोह उदय दुख पावै .....

संसार के अज्ञानी जीव मोह के उदय से दुख प्राप्त करते हैं।।टेक।।

संसारी जीव अपने चैतन्य के स्वरूप को नहीं जानता और पर पदार्थों में अपनापन करता है। परद्रव्यों का परिणमन आतमा के आश्रय से नहीं होता, अतः जब वह पराश्रित परिणमन जीव की इच्छानुसार नहीं होता तब यह बहुत आकुलित होता है।।१।।

संसारी जीव रागादि को भला जानकर उनका सेवन करते है यद्यपि उससे कर्मबंधन ही बढ़ता है फिर भी यह जीव आत्मा के हितकारी भाव सम्यक् दर्शन आदि का ध्यान नहीं करता।।२।।

पंचेन्द्रियों को तृप्त करने के लिये अनेक विषय–भोगों को एकत्रित करते हैं और जब ये नहीं मिलते तो बहुत आकुलित होता है और अपने हृदय में समता रूपी सुख प्राप्त नहीं करता क्योंकि संयोग–वियोग तो कर्माश्रित हैं।।३।।

कविवर पण्डित भागचंदजी कहते हैं कि अज्ञानी जीव को समस्त कर्मों का नाश से प्राप्त होने वाली मोक्ष दशा के प्रति प्रेम नहीं होता और इसी मिथ्यात्व को सेवन करता हुआ अनंत काल व्यर्थ में गंवा देता है।।४।।